लोक-सभा वाद-विवाद
का
संक्षिप्त अनदित संस्करण

SUMMARISED TRANSLATED VERSION
OF
5th LOK SABHA DEBATES

[पहला सत्र
First Session]

[खंड 1 में अंक 1 से 12 तक हैं
Vol. I contains Nos. 1 to 12]

लोक-सभा सचिवालय
नई दिल्ली
LOK SABHA SECRETARIAT
NEW DELHI

मूल्य : एक रुपया

Price : One Rupee

विषय-सूची/CONTENTS

अंक 2, सोमवार, 22 मार्च, 1971/1, चैत्र 1893 (शक)

No. 2, Monday, March 22, 1971/Chaitra 1, 1893 (Saka)

विषय	Subject		पृष्ठ/Pages
सदस्यों द्वारा शपथ ग्रहण	Members Sworn	..	1—2
अध्यक्ष का चुनाव	Election of Speaker	..	2—3
अध्यक्ष को बधाई	Felicitations to the Speaker	..	3
श्रीमती इन्दिरा गांधी	Shrimati Indira Gandhi	..	3
श्री ए० के० गोपालन	Shri A. K. Gopalan	..	3—4
डा० गोविन्द दास	Dr. Govind Das	..	4
श्री के० मनोहरन	Shri K. Manoharan	..	4—5
श्री इन्द्रजीत गुप्त	Shri Indrajit Gupta	..	5
श्री अटल बिहारी बाजपेयी	Shri Atal Bihari Vajpayee	..	5—6
श्री श्याम नन्दन मिश्र	Shri Shyamnandan Mishra	..	6—7
डा० मेलकोटे	Dr. G. S. Melkote	..	7
श्री पी० के० देव	Shri P. K. Deo	..	7
डा० कर्णी सिंह	Dr. Karni Singh	..	7—8
श्री त्रिदिब चौधरी	Shri Tridib Choudhuri	..	8
श्री एस० एल० सक्सेना	Shri S. L. Saksena	..	8
श्री मोहम्मद इस्माइल	Shri M. Mohammad Ismail	..	8
श्री दन्डवते	Shri Madhu Dandavate	..	9
श्री रामदेव सिंह	Shri Ram Deo Singh	..	9
श्री वीरेन्द्र सिंह	Shri Rao Birender Singh	..	9
श्री वरकी जार्ज	Shri Varkey George	..	9
श्री बी० पी० मौर्य	Shri B. P. Maurya	..	9
श्री शमीम अहमद शमीम	Shri S. A. Shamim	..	9
श्री शिवकुमार शास्त्री	Shri Shiv Kumar Shastri	..	9
अध्यक्ष महोदय	Mr. Speaker	..	9—10

LOK SABHA
लोक-सभा

सोमवार, 22 मार्च, 1971 / 1 चैत्र, 1893 (शक)
Monday, March 22, 1971/Chaitra 1, 1893 (Saka)

लोक-सभा ग्यारह बजे समवेत हुई
The Lok Sabha met at Eleven of the Clock

[**सामयिक अध्यक्ष महोदय (डा० गोविन्द दास) पीठासीन हुए**
Mr. SPEAKER Pro-tem (Dr. Govind Das) *in the Chair*]

Mr. Speaker : The Secretary will call out the names of Members who have not taken and subscribed oath or affirmation.

सदस्यों द्वारा शपथ ग्रहण
MEMBERS SWORN

श्री डी० एन० सिंह (हाजीपुर)
श्री ए० के० गोपालन (पालघाट)
श्री दरबारा सिंह (होशियार पुर)
श्री बृजराज सिंह—कोटा (झालावाड़)
श्रीमती कृष्णा कुमारी (जोधपुर)
श्री के० कामराज (नागरकोइल)
श्री एस० एम० बनर्जी (कानपुर)
श्री वी० पी० सिंह (फूलपुर)
श्री दिनेश जोरदर (माल्दा)
श्री रेणुपद दास (कृषनगर)
श्रीमती विभा घोष (नवद्वीप)
श्री माधुर्य्य हाल्दर (मथुरा पुर)
श्री ज्योतिर्मय बसु (डायमंड हार्बर)
श्री मुहम्मद इस्माइल (बैरकपुर)
श्री एस० पी० भट्टाचार्य (उलुबेरिया)
श्री मनोरंजन हाजरा (आरामबाग)

श्री जगदीश भट्टाचार्य (घाटल)
श्री ए० के० साहा (विष्णुपुर)
श्री कृष्ण हाल्दर (औसग्राम)
डा० सरदीश राय (बोलपुर)
श्री गदाधर साहा (वीरभूम)
श्री शशि भूषण (दिल्ली दक्षिण)
श्री पाओकाई (बाह्य मनीपुर)
श्री बीरेन दत्त (त्रिपुरा पश्चिम)
श्री दशरथ देव (त्रिपुरा पूर्व)
श्री एस० ए० शमीम (श्रीनगर)
श्री एम० के० कृष्णन् (पोन्नाणि)
श्री बी० नरसिम्हा रेड्डी (निरयाल गुडा)
श्री डी० एन० भट्टाचार्य (सीरमपुर)

अध्यक्ष का चुनाव
ELECTION OF SPEAKER

Mr. Speaker : Shrimati Indira Gandhi may now move the motion standing in her name.

प्रधान मंत्री, अणुशक्ति मंत्री, गृह-कार्य मंत्री, योजना मंत्री और सूचना तथा प्रसारण मंत्री (श्रीमती इन्दिरा गांधी) : मैं प्रस्ताव करती हूं :

"कि श्री जी० एस० ढिल्लन को, जो इस सभा के सदस्य हैं, इस सभा का अध्यक्ष चुना जाए"

संसद्-कार्य और पोतपरिवहन तथा परिवहन मंत्री (श्री राजबहादुर) : मैं उक्त प्रस्ताव का अनुमोदन करता हूं।

Mr. Speaker : Motion moved :

"That Shri G. S. Dhillon, a Member of this House, be chosen as the Speaker of this House"

Shri Yashwantrao Chavan may now move the motion standing in his name... **(Interruption).**

वित्त मंत्री (श्री यशवन्तराव चह्वाण) : मेरा प्रस्ताव समान आशय का है, अतः मैं उसे प्रस्तुत करना आवश्यक नहीं समझता।

Shri Atal Bihari Vajpayee (Gwalior) : Mr. Speaker, according to the Rules of Procedure, if there are more than one motion about the same subject, only one of such motions, is taken up and the rest are deemed to have been moved. You have just now asked Mr. Chavan to move another motion pertaining to the same subject. I. therefore, want to know if the Rules of Procedure have been changed or a new procedure is being adopted.

Mr. Speaker : There is no change in Rules of Procedure. As Mr. Chavan does not deem it necessary to move his motion, the question does not arise. Now, the first motion moved

by Shrimati Indira Gandhi and seconded by Shri Raj Bahadur will be put to the vote of this House.

प्रश्न यह है :

"कि श्री जी० एस० ढिल्लन को, जो इस सभा के सदस्य हैं, इस सभा का अध्यक्ष चुना जाए।"

प्रस्ताव स्वीकृत हुआ

The motion was adopted

अध्यक्ष महोदय : प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ है।

I declare that Shri G. S. Dhillon is duly elected as the Speaker of this House. Now, I have great pleasure in inviting Shri G. S. Dhillon to occupy the Chair.

[प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी तथा श्री ए० के० गोपालन श्री जी० एस० ढिल्लन को अध्यक्षपीठ तक ले गये]

[Shri G. S. Dhillon was conducted to the Chair by the Prime Minister Shrimati Indira Gandhi and Shri A. K. Gopalan].

अध्यक्ष को बधाई
FELICITATIONS TO THE SPEAKER

[**अध्यक्ष महोदय श्री ढिल्लन पीठासीन हुए**
Mr. Speaker (Shri G. S. Dhillon) *in the Chair*]

प्रधान मंत्री, अणुशक्ति मंत्री, गृह-कार्य मंत्री, योजना मंत्री, और सूचना तथा प्रसारण मंत्री (श्रीमती इन्दिरा गांधी) : सभा की नेता होने के नाते मैं श्री ढिल्लन को उनके अध्यक्ष पद के लिये चुने जाने पर हार्दिक बधाई देती हूं और आशा करती हूं कि सभा के अन्य सदस्य भी सभा की परम्परा बनाए रखने में उन्हें पूर्ण सहयोग देंगे।

श्री ढिल्लन को चुनकर हम केवल इस परम्परा का पालन नहीं कर रहे कि अध्यक्ष को पुनः चुन लेना चाहिए, अपितु हम सब एक कर्तव्यनिष्ठ तथा सौजन्य व्यक्ति के प्रति अपना सम्मान प्रकट कर रहे हैं। गत दो वर्षों में सभा में शायद ही कभी शांति बनी रही हो। यहां छोटे मोटे हंगामे, जटिल संवैधानिक मामले, प्रक्रिया सम्बन्धी झगड़े तथा नियमापत्तियां सदैव व्यवस्था के लिए खतरा बनी रहीं किन्तु श्री ढिल्लन ने, सदैव संसदीय आचरण के मूल सिद्धान्तों को कायम रखते हुए अपनी सौजन्यता एवं निष्पक्षता में ढील न आने दी। इन सभी संकटों में उन्होंने योग्यता से सभा का मार्गदर्शन किया। अपने स्वभाव तथा व्यक्तिगत गुणों के कारण श्री ढिल्लन इस पद के योग्य हैं।

अध्यक्ष का कार्य कोई सरल नहीं होता। मैं आशा करती हूं सभा इसे अपने व्यवहार से और कठिन न बनाएगी।

श्री ए० के० गोपालन (पालघाट) : अध्यक्ष महोदय, सबसे पहले मैं आपको इस अध्यक्ष पद के लिये पुनः निर्वाचित होने पर बधाई देता हूं।

जैसाकि आप जानते हैं, हाल ही के चुनावों के बाद एक नई स्थिति उत्पन्न हो गई है। सत्तारूढ़ कांग्रेस दल को सभा में पूर्ण बहुमत प्राप्त हुआ है। अत: स्वाभाविक रूप से विरोधी पक्ष की उपेक्षा करने की प्रवृत्ति होगी। दूसरा महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि सत्तारूढ़ दल को कुछ विरोधी दलों के समर्थन से बहुमत प्राप्त हुआ है। इसी प्रकार विरोधी दलों के कई सदस्य सत्तारूढ़ दल के समर्थन से निर्वाचित हुए हैं। अत: ऐसी स्थिति में अध्यक्ष का यह कर्तव्य हो जाता है कि वह यह सुनिश्चित करें कि वास्तविक रूप से कौन किसका प्रतिनिधित्व करता है, सभा में विरोधी आवाज कौन उठाता है और वास्तविक विरोधी कौन है। आशा है अध्यक्ष महोदय काफी सावधान रहकर यह सुनिश्चित करेंगे कि वास्तविक विरोधी पक्ष को, देश के लोगों की शिकायतों को उठाने के लिये उचित अवसर उपलब्ध होता रहे। इस सम्बन्ध में मैं यह भी कहना चाहूंगा कि पिछली संसद के अनुभव बहुत अच्छे नहीं रहे। प्राय: जब भी दलित वर्ग के सामाजिक अथवा आर्थिक शोषण की बात उठाई गई, उसे तकनीकी आधार पर सदा अस्वीकार किया गया और नियमों के सूक्ष्म विश्लेषण का प्रयोग सदा निर्धन वर्ग की शिकायतों को दबाने के लिए किया गया। आशा है इस बार अध्यक्ष महोदय अधिक निष्पक्षता से काम लेंगे तथा अपनी स्वविवेकी शक्तियों का प्रयोग जनता के हित के लिये करेंगे।

अन्त में मैं अपने दल की ओर से आपको पूरे सहयोग का आश्वासन देता हूं।

Dr. Govind Das (Jabalpur) : I congratulate you on your election to this august office for second time. The reason for your unanimous election as the Speaker of this House is your perfect impartiality in the discharge of your duties during the last term.

This unanimous election becomes significant when we ook back and see that Shri Vithal Bhai Patel and Shri Mavalankar got to this office by a mojority of two votes.

For some time past, the regulation of business in tihs House had become very difficult ; even then you had conducted the proceedings very successfully. For controlling the House, you have to exercise a lot of restraint and I hope that the proceedings in the House shall be conducted as they ought to be.

श्री के० मनोहरन (मद्रास उत्तर) : अध्यक्ष महोदय मैं द्रविड़ मुनेत्र कषगम दल की ओर से, आपके सर्वसम्पति से अध्यक्ष पद के लिए पुन: चुने जाने पर, हार्दिक बधाई देता हूं।

एक बार अध्यक्ष पद के लिए चुने जाने के बाद आप किसी दल के सदस्य नहीं रह जाते। संसदीय प्रजातंत्र के उचित कार्य संचालन में अध्यक्ष का महत्वपूर्ण योगदान होता है। अत: उसे निष्पक्षता और निर्भीकता से कार्य करना आवश्यक है। अध्यक्ष के गुण सर्वविदित हैं। अध्यक्ष को निस्पक्ष, निर्भीक एवं विनोदप्रिय होना चाहिए और श्री ढिल्लन का इस पद के लिए पुन: चुना जाना इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि वह उपर्युक्त सभी गुणों से युक्त हैं। यही कारण है कि कठिनाई के समय में भी आप धैर्य से सभा की कार्यवाही का संचालन करने में समर्थ हुए।

मैं आपका ध्यान इस बात की ओर भी दिलाना चाहता हूं कि अभूतपूर्व विजय प्राप्त होने के पश्चात सत्तारूढ़ दल को न केवल सुविधाजनक एवं पूर्ण बहुमत प्राप्त हुआ है, बल्कि उसका बहुमत दो तिहाई हो गया है। 350 से अधिक सदस्य सत्तारूढ़ दल के हैं। जहां तक विरोधी दल का सम्बन्ध है यह बहुत ही दुखप्रद बात है कि इस सभा में कार्य करने के लिए पूर्णरूप से मान्य विरोधी दल नहीं है। अत: अध्यक्ष महोदय को विरोधी दलों के प्रति अधिक ध्यान देना होगा।

मैं अपने दल की ओर से पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन देता हूं । हम लोग सभा के सम्मान और अनुशासन को बनाए रखने में सहायक होंगे ।

अन्त में मैं आपको पुनः इस पद के लिए चुने जाने पर बधाई देता हूं ।

श्री इन्द्रजीत गुप्ता (अलीपुर) अध्यक्ष महोदय, आपके द्वारा दूसरी बार इस पवित्र पद को संभालने के इस अवसर पर मैं अपने दल की ओर से आपको हार्दिक बधाई देता हूं । अध्यक्ष पद के दायित्व को निभाना अत्यन्त कठिन है । कई ऐसे अवसर आते हैं जब कई सदस्य अध्यक्ष द्वारा कार्यवाही के संचालन के ढंग पर सन्तुष्ट नहीं होते । परन्तु मुझे आपके संबंध में केवल इतना ही कहना है कि लगभग पिछले डेढ़ वर्ष से जब से हमने आपको देखा है, हमने पाया है कि कोई भी व्यक्ति इससे अधिक निष्पक्ष ढंग से कार्यवाही का संचालन नहीं कर सकता (**अन्तर्बाधा**) ।

आपने इस पद को समुचित गरिमा प्रदान की है । आप हमेशा सभी सदस्यों के साथ विनम्र शिष्ट सहनशील रहे हैं । आपका कार्य अति कठिन है और मैं अपने दल की ओर से विश्वास दिलाता हूं कि सभा की कार्यवाही के संचालन में आपको हमारा सम्पूर्ण सहयोग मिलता रहेगा ।

मेरे मित्र श्री गोपालन ने चुनावों में विरोधी पक्ष के कुछ दलों द्वारा सत्ताधारी दल के सहयोग की ओर संकेत करते हुए कहा कि यह असाधारण बात है । परन्तु यदि हम देश का पिछले कुछ समय का इतिहास ध्यान में रखें तो देखते हैं कि इस समय में श्री गोपालन के दल ने भी सत्ताधारी दल को इस सभा में अपना सम्पूर्ण सहयोग दिया है अतः यह स्थिति असाधारण नहीं है । (**अन्तर्बाधा**) जिन तत्त्वों के कारण इस सदन में सत्ताधारी दल को सहयोग दिया गया उन्हीं तत्त्वों को हराने के लिए चुनाव में भी सहयोग दिया गया । मुझे आशा है कि श्रमिकों शोषितों आदि की जिस भावना की इस चुनावों में जीत हुई है उसे इस सदन में व्यक्त करने के लिए आप पूर्ण अवसर प्रदान करेंगे ।

विरोधी दलों की सदस्य संख्या में कमी जरूर हुई है, परन्तु अपनी रक्षा में वह सक्षम हैं । परन्तु फिर भी दूसरी ओर की सदस्य संख्या देखते हुए उन्हें आप के संरक्षण की अपेक्षा है । अन्त में मैं कहना चाहता हूं कि नये सदस्यों को पहचानने में आप को समय लगेगा और इसके साथ ही मैं इस अवसर पर मैं सदन में चुनकर आये युवा सदस्यों की अधिक संख्या पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त करता हूं तथा उनका हार्दिक स्वागत करता हूं और आशा करता हूं कि यह वर्ग दलीय सीमाओं से ऊपर उठकर भावी पीढ़ियों की भावनाओं को व्यक्त करेगा ।

अन्त में मैं एक बार फिर अपने दल की ओर से आपको बधाई देता हूं तथा अपने दल के सहयोग का आश्वासन देता हूं ।

Shri Atal Bihari Vajpayee (Gwalior) : On behalf of Bharatiya Jana Sangh and myself, I convey my heartiest congratulations to you. Your unanimous election denotes the fact that you have won the confidence of all the sections of the House. But I would like to mention here that if an opportunity had been provided to opposition Members to file your nomination papers, it would have added to the dignity of your election. It would have been better had the ruling party shown the courtesy of taking the opposition parties in confidence. There is need to establish

a healthy tradition that the election of the Speaker should be unanimous, not in this House only, but outside the House also. The time has come when we should reconsider this issue.

Mr. Speaker, Sir, just now Seth Govind Das tried to recall some glimpses of the history of the proceedings of the House. He has reminded us of late Shri Vithalbhai Patel. Our every action and especially that of the Speaker should be inspired by the boldness, impartiality and firmness of Shri Patel.

India is the greatest democracy and this House is the highest representative body of Indian people. This House must prove a powerful forum to represent the feelings of the people. You, being the Speaker of the House, have to safeguard the dignity and the rights of this House. You are to maintain decorum in the House. At the same time, it is your responsibility to provide an equal opportunity to the Members to participate in the debate so that they are able to ventilate the grievances of the people.

It has been stated by some Members that mid-term poll has changed the shape of this House. The strength of the opposition has declined considerably and we have to face an absolute majority. It is feared that the Government may not become autocratic. You will have to keep a check on the Government and help the opposition by your impartial behaviour. Though the number of opposition Members is less but we hope opposition Members will be provided an equal opportunity to discharge their duty towards the people under proper parliamentary traditions. We have already extended our full co-operation to you and assure the same in future also.

Once again, I welcome you and convey my best wishes on your success.

श्री श्यामनन्दन मिश्र (बेगुसराय) : अध्यक्ष महोदय, मैं अपने दल की ओर से इस गौरवपूर्ण पद के लिए आपके निर्वाचन का स्वागत करते हुए इस सुअवसर पर आपको हार्दिक बधाई देता हूं । परन्तु यह खेद की बात है कि अध्यक्ष के निर्वाचन के सम्बन्ध में विरोधी दलों के साथ कोई विचार-विमर्श नहीं किया गया । विकसित देशों में यह प्रथा है कि अध्यक्ष का निर्वाचन करते समय विरोधी दलों से भी विचार विमर्श किया जाता है परन्तु हमारे यहां यह बात नहीं है ।

आपका दूसरी बार निर्वाचन इस तथ्य का प्रमाण है कि हमारे देश में भी अन्य देशों की तरह ही स्थाई अध्यक्ष की प्रथा का निर्माण हो रहा है । मुझे आशा है कि भविष्य में भी इस प्रथा का अनुसरण होता रहेगा ।

कुछ सदस्यों ने इस बात का उल्लेख किया है कि इस सदन में विरोधी दलों की संख्या कम हो गई है । विरोधी दलों के सदस्यों की संख्या में भले ही कमी आ गई हो परन्तु उनके मनोबल में आपको कोई कमी नजर नहीं आयेगी और वह सदा ही अध्यक्ष महोदय से न्याय की अपेक्षा करते रहेंगे ।

एक अन्य बात जो मैं इस अवसर पर कहना चाहता हूं वह यह है कि संसद की कार्यवाही सुचारु और मर्यादापूर्ण ढंग से चलाने के लिए हम सदा ही आपको सहयोग देते रहेंगे । हमने आपको पूर्ण विश्वास के साथ चुना है और हमें आशा है कि आप हमारी आशाओं को पूर्ण करेंगे और इस सदन के गौरव को बनाये रखेंगे ।

अन्त में मैं आपसे यह आशा करता हूं कि सरकार जिन बातों पर संसदीय आलोचना से बचना चाहती है, आप हमें उन पर संसदीय आलोचना करने का पूरा अवसर देते रहेंगे। इन शब्दों के साथ मैं आपको एक बार फिर इस सुअवसर पर अपनी हार्दिक बधाई देता हूं।

डा० मेलकोटे (हैदराबाद) : अध्यक्ष महोदय, मैं तेलंगाना प्रजा समिति के सदस्यों की ओर से आपका स्वागत करता हूं। हम में से कुछ सदस्य आपके सद्स्वभाव तथा कर्त्तव्य-परायणता की भावना से पहले ही परिचित हैं। गत दो-तीन वर्षों में सदस्यों ने सदन की प्रतिष्ठा को बनाये रखने के लिए पूर्ण सहयोग नहीं दिया है, परन्तु मैं समिति की ओर से आपको यह आश्वासन दिलाना चाहता हूं कि हम इस सदन की प्रतिष्ठा को बनाये रखने के लिए सदा अपना सहयोग देते रहेंगे और लोकतन्त्र की ऊंची से ऊंची परम्पराओं का निर्माण करेंगे। हम में से यदि किसी ने दल बदलना होगा तो पहले वह अपने पद से त्यागपत्र देगा और फिर पुनः निर्वाचित होकर आयेगा। इस सम्बन्ध में हमारा विचार एक विधेयक प्रस्तुत करने का भी है।

हमारा एक छोटा सा दल है परन्तु फिर भी हमने दस स्थान प्राप्त किये हैं। हमारा प्रमुख उद्देश्य तेलंगाना के लिए अलग राज्य की मांग का समर्थन करना है।

जो लोग इस सदन में निर्वाचित होकर आये हैं मैं उन्हें भी बधाई देता हूं। इसके साथ ही मैं आपको पुनः यह आश्वासन दिलाना चाहता हूं कि सदन की गौरवमय मर्यादाओं को बनाये रखने के लिए हम सदा आपको अपना सहयोग देते रहेंगे। आशा है कि जब कभी हमारे राज्य से सम्बद्ध कोई समस्या सदन के समक्ष आयेगी आप हमें उस पर विचार व्यक्त करने का उचित अवसर देंगे।

श्री पी० के० देव (कालाहांडी) : मैं स्वतन्त्र दल की ओर से संसद् के इस उच्च पद के लिए निर्वाचित होने पर आप को बधाई देता हूं। वर्तमान लोक-सभा के स्वरूप के अन्तर्गत आपका दायित्व काफी बढ़ गया है। मेरा आपसे अनुरोध है कि आप मूल अधिकारों और संविधान की सुरक्षा के लिए सदा सतर्क रहें ताकि इस देश में प्रजातन्त्र की जड़ें मजबूत हो सकें। यद्यपि शासक दल को पूर्ण बहुमत प्राप्त हो गया है फिर भी उन्हें केवल 43 प्रतिशत मत प्राप्त हुये हैं। यदि इस भारी बहुमत द्वारा अल्पसंख्यक लोगों के हितों की अवहेलना की जाती है तो यह देश के प्रजातन्त्र के लिए एक दुर्भाग्यपूर्ण बात होगी। मुझे आशा है कि आप सभी वर्गों के लोगों को विभिन्न मामलों पर अपने-अपने विचार व्यक्त करने का उचित अवसर देते रहेंगे।

अन्त में मैं आपको यह विश्वास दिलाता हूं कि इस सदन की कार्यवाही का संचालन करने में हमारा दल सदा आपको सहयोग देता रहेगा।

डा० कर्णी सिंह (बीकानेर) : अध्यक्ष महोदय, आपके एक बार पुनः अध्यक्ष निर्वाचित होने के इस शुभ अवसर पर मैं सदन के निर्दलीय सदस्यों की ओर से आपको हार्दिक बधाई देता हूं। आपका सर्वसम्मति से निर्वाचन इस बात का प्रमाण है कि आपको सदन के सभी वर्गों का समान रूप से विश्वास प्राप्त है। आपने अपने सद्व्यवहार तथा निष्पक्षता के कारण पिछली लोक सभा में ही काफी लोकप्रियता प्राप्त कर ली थी। इस चुनाव के अवसर पर भी बिना किसी दल के प्रत्याशी के रूप में चुनाव लड़ने का आपका विचार भी सराहनीय था जिसके द्वारा आप एक स्वस्थ परम्परा का निर्माण करना चाहते थे। आपके व्यक्तित्व में विभिन्न गुण देखने को मिलते हैं।

इस अवसर पर मैं आपसे यह अनुरोध करना चाहता हूं कि आपको इस सदन की अध्यक्षता का कार्यभार बड़े ऐतिहासिक अवसर पर सौंपा गया है। यह निश्चय ही इस सदन का अहोभाग्य है कि उसे इस समय आप जैसा अध्यक्ष मिला है। अब जबकि चुनाव की दौड़-धूप समाप्त हो गई है हम सभी को जनता की भलाई के लिए भरसक प्रयत्न आरम्भ कर देना चाहिए। इसके साथ ही मैं आपसे यह आशा करता हूं कि आप 1952, 1957 और 1962 में प्रचलित, पिछले बैंचों पर बैठे सदस्यों को भी विवाद आरम्भ करने का अवसर देने की पद्धति को पुनः आरम्भ कर देंगे। अन्त में मैं आपको अपने सहयोग का आश्वासन देता हूं।

श्री त्रिबिद चौधरी (बरहामपुर) : अध्यक्ष महोदय, मैं भी आपको इस शुभ अवसर पर बधाई देता हूं। बहुत से सदस्यों ने सदन के बदले हुये स्वरूप और शासक दल के भारी बहुमत का उल्लेख किया है। विरोधी दलों की संख्या में जो भारी कमी हुई है उससे उनके मन में कुछ सन्देह हो सकते हैं। परन्तु मेरे जो मित्र 1952 से ही इस सदन के सदस्य रहे हैं उन्हें मालूम होगा कि उस समय भी विरोधी दलों की स्थिति लगभग यही थी। अतः मैं माननीय सदस्यों को यह स्मरण कराना चाहता हूं कि विरोधी दलों का महत्व उनकी संख्या से उतना नहीं आंका जाता जितना कि उनकी भूमिका से आंका जाता है।

मुझे स्मरण है कि आज से 19 वर्ष पूर्व एक बार सदन के नेता स्वर्गीय जवाहर लाल नेहरू ने तत्कालीन अध्यक्ष श्री मावलंकर से श्री नम्बियार को सदन से निकालने के लिये कहा था। परन्तु उस महान अध्यक्ष ने उस समय के भारी बहुमत वाले सदन के नेता की अनुचित बात मानने से इन्कार कर दिया था। अतः मैं बहुमत-प्राप्त दल के सदस्यों और सदन के नेता को यह स्पष्ट करना चाहता हूं कि हम सभी को अध्यक्ष के निर्देशों का पालन कर, इस संसद की स्वस्थ परम्पराओं को बनाये रखना है।

श्री एस० एल० सक्सेना (महाराजगंज): मैंने इस सदन में तीन अध्यक्षों के साथ कार्य किया है और मुझे इस बात की पूर्ण जानकारी है कि सदन में अध्यक्ष की भूमिका कितनी महत्वपूर्ण होती है। यद्यपि मैंने आपके साथ काम नहीं किया फिर भी जो कुछ मैं आपके बारे में जान पाया हूं उससे ऐसा लगता है कि आप भी सभी महान परम्पराओं को बनाये रखेंगे। प्रायः स्वतन्त्र तथा निर्दलीय सदस्यों की ओर अध्यक्ष का ध्यान कम जाता है परन्तु मुझे आशा है कि आपके अध्यक्ष-काल में ऐसा नहीं होगा।

अंत में मैं यह आशा करता हूं कि आपके सक्रिय सहयोग से हम विश्व के समक्ष विश्व के सबसे बड़े लोकतन्त्र को एक आदर्श रूप में प्रस्तुत कर सकेंगे।

श्री मोहम्मद इस्माइल (मंजेरी) : अध्यक्ष महोदय, मैं आपके अध्यक्ष पद के लिये चुने जाने पर आपको अपने दल की ओर से बधाई देता हूं।

यह कहना आपकी खुशामद करना नहीं होगा कि भूतकाल में आपकी तुरत बुद्धि, हास्य और निष्पक्षता से सदन लाभान्वित होता रहा है। आपने सदैव अल्पसंख्यकों के हितों की रक्षा की है और आशा है आप भविष्य में भी उसी प्रकार बल्कि उससे भी अधिक अच्छी तरह उनकी रक्षा करते रहेंगे।

श्री दन्दावते (राजापुर) : आपके सर्वसम्मति से हुए चुनाव पर मैं आपको बधाई देता हूं और आशा करता हूं कि आप विरोधी पक्ष के हितों की रक्षा करेंगे और उसके साथ न्याय करेंगे। मैं प्रजा समाजवादी दल की ओर से आपको आश्वासन देता हूं कि हम सदन की मर्यादा अक्षुण्ण रखेंगे और हम किसी भी प्रकार का अभद्र व्यवहार यहां नहीं करेंगे। सभा में नियमों का पालन भी इस प्रकार किया जाये कि लोगों की वास्तविक इच्छा के प्रदर्शन में वह आड़े न आए।

हम एक समाजवादी कार्यक्रम को अपने सामने रख कर आचरण करेंगे और हमारा प्रत्येक कदम जनतंत्र के हित में होगा।

Shri Ramdeo Singh (Maharajganj) : Had the ruling party consulted the opposition before the nomination of the Speaker, it would have been better. Under the present conditions, your responsibility has increased and I think you will perform your duty in an honourable way and will not act in favour of the ruling party and will guard the interests of the opposition members.

Shri Rao Birender Singh (Mohendergarh) : I congratulate you on your unanimous election as the Speaker. I know you from Punjab where you were Speaker of the Assembly and I was a Minister. I know how you safeguarded the interests of opposition there. I think you will keep the same spirit here also and will safeguard the interests of the opposition in this House.

श्री वरकी जार्ज (कोट्टायम) : केरल कांग्रेस की ओर से मैं आपको बधाई देता हूं। यह पहला मौका है जबकि मेरा दल संसद् में अपना प्रतिनिधित्व कर रहा है।

Shri B. P. Maurya (Hapur) : Your unanimous election as the Speaker shows that you have got the confidence of all the parties and Members. I hope you will allot more time for the discussions of public interest.

Shri S. A. Shamim (Shrinagar) : I am one of those lucky persons who do not belong to any party and the one who has not bound himself with the ideology of any party. I am bound to my soul only. Such persons require your protection very much and I think you will not leave any stone unturned in giving protection to such members.

Some people say that the shape of the Parliament has changed a lot. I am glad that the present Parliament reflects the change in the feelings of the public and I hope the Government will always keep this in their mind. Ruling party rules; it is opposition which speaks. I hope they will do their duty.

Shri Shiv Kumar Shastri (Aligarh) : I congratulate you on your unanimous election as Speaker of the Lok Sabha.

अध्यक्ष महोदय : मैं सदस्यों और सदन के नेता को, मेरे सम्बन्ध में उन्होंने जो कुछ कहा है उसके लिए धन्यवाद देता हूं।

मुझे जो कार्य सौंपा गया है वह निःसन्देह बहुत ही जिम्मेदारी का है पर मैं सदस्यों द्वारा सहयोग के आश्वासन के आधार पर इस भार को उठाऊंगा।

मैं चौथी लोक सभा के सदस्यों का, जिन्होंने मेरे अध्यक्षता-काल में सहयोग दिया था, उसके लिये आभारी हूं।

हमारे देश के लोग बड़े सहनशील रहे हैं और मैं आशा करता हूं कि अब भी उसी परम्परागत सहनशीलता का परिचय देंगे। इस सदन में हम सबको जनसाधारण की आवश्यकताओं और उनकी इच्छा को सदैव अपने सम्मुख रखना है।

इस पीठ पर बैठकर मुझे आज अपने से पूर्व इस स्थान को सुशोभित करने वाले लोगों की याद आती है। इस सदन की मर्यादा, प्रतिष्ठा और महत्ता को अक्षुण्ण रखने का मैं पूरा-पूरा प्रयत्न करता रहूंगा और सभी पक्षों के साथ समान व्यवहार करूंगा। मुझे आशा है कि सदन मुझे पूरा सहयोग देगा।

वर्तमान सदन का स्वरूप पहले सदनों की अपेक्षा बिलकुल भिन्न है। मैं आशा करता हूं कि मैं नए सदन की आवश्यकताओं के अनुकूल अपने आपको ढाल सकूंगा।

सदस्यों द्वारा शपथ ग्रहण
MEMBERS SWORN

श्री रतनलाल ब्राह्मण (दार्जिलिंग)

श्री समर मुखर्जी (हावड़ा)

श्री बी० के० मोदक (हुगली)

श्री सरोज मुखर्जी (कटवा)

श्री रोबिन सेन (आसनसोल)

इसके पश्चात् लोक-सभा मंगलवार 23 मार्च, 1971/2 चैत्र, 1893 (शक) को राष्ट्रपति के अभिभाषण के समाप्त होने के आधे घण्टे बाद तक के लिए स्थगित हुई।

The Lok Sabha then adjourned till half an hour after the conclusion of the President's Address on Tuesday, March 23, 1971/Chaitra 2, 1893 (Saka).

Tej Kumar Press, Lucknow—6-5-71—340